श्री शान्तिनाथ भगवान के मोक्षकल्याणक को शान्तिधारा दिवस के रुप में मनाएं

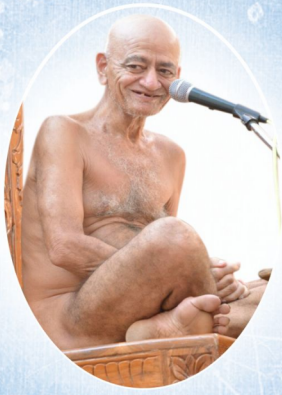

संत शिरोमणि
आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज

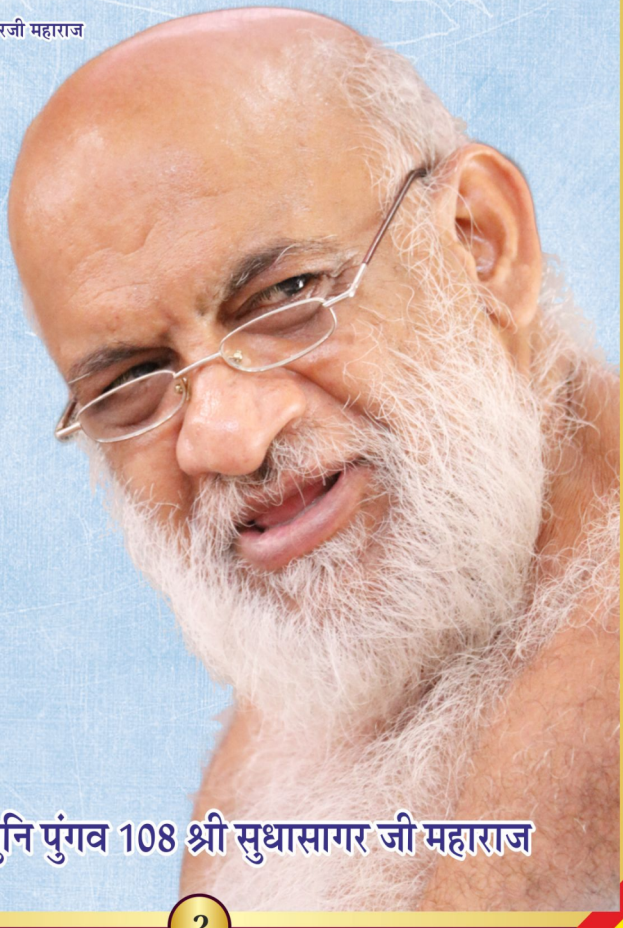

निर्यापक मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज

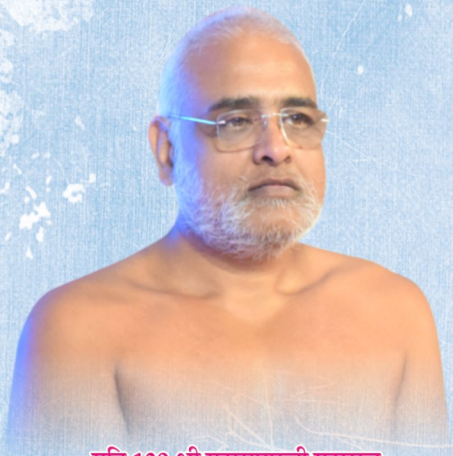

मुनि 108 श्री महासागरजी महाराज

मुनि 108 श्री निष्कंपसागरजी महाराज

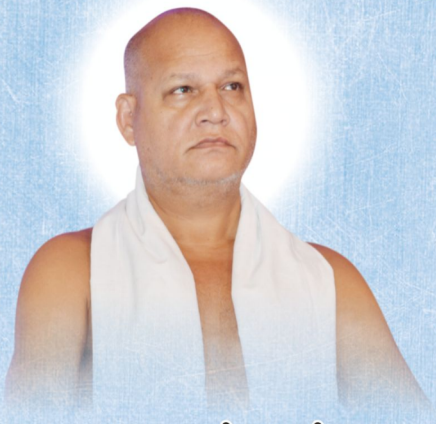

क्षुल्लक 105 गम्भीरसागर जी महाराज

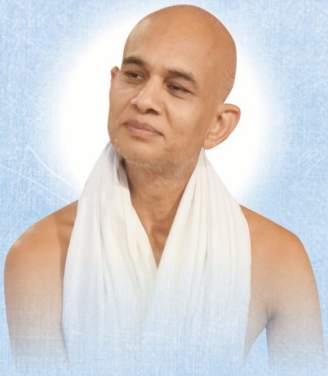

क्षुल्लक 105 धैर्यसागर जी महाराज

श्री शान्तिनाथ
शान्तिधारादिवस जिन पूजा

श्री शान्तिनाथ शान्तिधारादिवस जिन पूजा

ज्ञानोदय

पंच महाकल्याणक संयुत, अष्ट प्रातिहार्यों युत हो,
चौंतिस अतिशय युत तीर्थंकर, सुरासुरों से वन्दित हो।
कामदेव चक्री पद भूषित, शान्तिनाथ मंगलकारी,
जिनकी बृहत्शान्तिधारा युत, पूजा है संकटहारी ॥

ओं ह्रीं अर्हं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्!

परकृत क्षुद्र उपद्रव नाशक, रोग अकाल मृत्यु हरती,
परमेष्ठी के बीजाक्षर युत, विघ्न शान्तिकर सुख करती।
काम क्रोध हर वैर पाप हर, बीजाक्षरी शान्तिधारा,
तभी शान्ति जिन तेरे पद में, करूँ शुद्ध जल की धारा ॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

सब अपयश हर चौर दुष्ट नृप, सर्प सिंह कृत भयहारी,
वृश्चिक श्वान दंश कृत भय हर, अति अनवृष्टि कष्टहारी।
प्रकृति प्रकोप हरे भूकम्पन, मंत्राक्षरी शान्तिधारा,
तभी शान्ति जिन तेरे पद में, चन्दन अर्पूं सुखकारा ॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं।

अग्नि वायु कृत सब अनिष्ट हर, आत्मघात परघात हरे,
क्षुद्र उपद्रव निर्बलता हर, भयकर दंगा युद्ध हरे।
कष्टप्रदा परमंत्र हरे जिन, तेरी बृहद् शान्तिधारा,
तभी शान्ति जिन तेरे पद में, लाये अक्षत शिवकारा ॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।।

सर्व शूल कटि कुक्षि अक्षि सिर, कण्ठ जानु के रोग हरे,
आन्त्र महाज्वर मोतिझरा हर, सन्निपात ज्वर रोग हरे।
कुष्ट अठारह चर्म रोग हर, हरपिस हरी शान्तिधारा
तभी शान्ति जिन तेरे पद में, भक्ति कुसुम मन वशकारा ॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं।

महावात मधुमेह जलोदर, रोग भगन्दर दूर करे,
कैंसर किडनी रोग भयंकर, श्वास कास क्षय रोग हरे।
चेचक रोग हरे जिन तेरी, संकटहरी शान्तिधारा,
तभी शान्ति जिन तेरे पद में, रखूँ क्षुधाहर चरु प्यारा ॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं।

शूल उदर उर पक्षघात हर, अपस्मार मन्दाग्नि हरे,
पथरी संग्रहणी संक्रामक, कण्ठ ग्रंथि बबासीर हरे।
उच्च निम्न लहु चाप रोग हर, शान्ति जिनेश शान्तिधारा,
तभी शान्ति जिन तेरे पद में, धरूँ दीप पथ उजयारा ॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।

नर गो गजाश्व महिष अजादिक, मारी रोगों को हरती,
शस्य धान्य तरु गुल्म पुष्प दल, फलादि मारी संहरती।
राष्ट्र देश वैश्विक मारी हर, शन्ति जिनेश शान्तिधारा,
तभी शान्ति जिन तेरे पद में, धूप खेऊँ यश गुणकारा ॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं।

भूत प्रेत वेताल शाकिनी, डाकिनी के भय विघ्न हरे,
मन्त्र तन्त्र कृत दृष्टि मुष्टि कृत, छल छिद्रों कृत दोष हरे।
अशुभ कर्म कृत कष्ट दुःख हर, शान्ति जिनेश शान्तिधारा,
तभी शान्ति जिन तेरे पद में, धरूँ सुफल शिव सुखकारा ॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं।

दुष्ट योगिनी सुर नर दानव, सिंह व्याघ्र कृत दोष हरे,
अष्टकुली अहि विष भय हरती, मारणोच्चाटन दोष हरे।
विद्वेषण मोहन वशता हर, तेरी प्रभो शान्तिधारा,
तभी शान्ति जिन तेरे पद में, अर्घ धरूँ अनर्घकारा ॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं।

प्रभो शान्तिधारा प्रसाद से, सत्त्व शौर्य विक्रम बल हो,
सर्व जीव मुनि संघ देश में, जल थल नभ में आनंद हो।

श्री धन जय यश अभय शान्ति हो, तुष्टि पुष्टि दीर्घायुष हो,
सुख समृद्धि कुल गोत्र वृद्धि हो, धर्म लाभ हो समाधि हो ॥

इत्याशीर्वादः शान्तये शान्तिधारा

यशोगान

बृहत्शान्तिधारा लिखी, माघनन्दि आचार्य,
बीजाक्षर सब सौख्यकर, करे नित्य भवि आर्य ॥

ज्ञानोदय छंद

ईश्वर अनन्त शक्ति पुंज हैं, विविध शक्तियों के भण्डार,
बीजाक्षर के उच्चारण से, खुलता इष्ट शक्ति का द्वार।
ओं आदिक सारे बीजाक्षर, पृथक् शक्तियों के आधार,
इष्ट भाव अनुरूप सुफल दें,जब प्रभु पर पड़ती जलधार ॥1॥
भक्त भावना इष्ट प्रार्थना, जिनबिम्बों पर जल की धार,
मंगल करे अमंगल हरती, महा शान्तिधारा सुखकार।
भक्त भावना जिनेन्द्र प्रतिमा, बीजाक्षर युत जल की धार,
वहाँ अलौकिक स्वरूप वाले, बीजाक्षर बनते आधार ॥2॥
स्त्री एक पुत्र के सम्मुख, माता स्वरूप हो जाती,
वही तिया पति सम्मुख होती, पत्नी स्वरूप हो जाती।
वही हुई जब भाई सम्मुख, तब वह बहना हो जाती,
भांजे सम्मुख वही एक तिय, मामी रूप आदि भाती ॥3॥
नाना संयोगो से नारी, नाना रूपों में भाती,
उसी तरह बीजाक्षर माला, नाना प्रभाव गुण लाती।
प्रति बीजाक्षर के अर्थों को, और फलों को कहूँ यहाँ,
मंगलकारी संकटहारी, प्रयोग को कर सकूँ महां ॥4॥
ओं यह अक्षर प्रणव बीज है, ब्रह्म तेज का बीज रहा,
सूचित करता जाग्रत करता, सावधान भी करे महां।
प्रथम द्वार पर घंटी बजाता, आगत को सूचित करता,
परमेष्ठी के प्रथमाक्षर से, मिलकर ओं अक्षर बनता ॥5॥

ह्रीं बीजाक्षर संयुत भगवन्, अकाल मृत्यु नहीं होवे,
श्रीं बीजाक्षर के प्रभाव से, भक्त उभय श्री युत होवे।
क्लीं बीजाक्षर के प्रयोग से, लक्ष्मी सहित कीर्ति पावे,
ऐं बीजाक्षर के जपने से, वचन सिद्धिदा हो जावे ॥6॥
अर्हं बीजाक्षर प्रभुवर का, सबको मंगलकारी हो,
वं बीजाक्षर का उच्चारण, सब रोगों का हारी हो।
मं बीजाक्षर हे प्रभु तेरा, भूत प्रेत बाधा हारी,
हं उच्चारण शरण प्रदाता, रक्षा कवच छांव कारी ॥7॥
सं उच्चारण मिथ्या भ्रम हर, सत्य जानने शक्ति धरे,
तं बल से दुर्भिक्ष नाशकर, सुख संपद धन धान्य भरे।
पं जल बीज समय पर बरसे, अनावृष्टि अतिवृष्टि हरे,
शस्य श्यामला देश भूमि हो, सुखद सुशीतल सृष्टि करे ॥8॥
झं झं चन्द्र बीज सुखकारक, चउ पुरुषारथ सिद्ध करे,
अर्थ काम पुरुषार्थ धर्म युत, साध मोक्ष को सिद्ध करे।
राजा को अनुकूल बनाता, राजा को भी बना सके,
बीजाक्षर के साथ शान्ति की, धारा का फल सुनो सखे!॥9॥
इ्वीं बीजाक्षर अमृत बीजी, अनिष्टहारी हितकारी,
शत्रु विनाशक रोग प्रहारक, विजय दिलाता सुखकारी।
क्ष्वीं उच्चारण विषापहारी, सर्पादिक से बचा रहा,
विष के दुष्प्रभाव को रोके, प्रभु प्रभाव को बता रहा ॥10॥
द्रां बीजी प्रभु महा शक्ति दो, द्रीं प्रभु असीम शक्तिप्रदा,
द्रावय प्रभु अनुकूल होइये, प्रभो! सहायक रहो सदा।
क्रौं प्रभु अंकुश बीज अहित हर, अशुभ रोकता शुभ लाता,
बीज नमो अर्हन् सुखदाता, शक्ति प्रदाता गुण लाता ॥11॥
क्षां बीजाक्षर मिली शक्ति की, रक्षा करता वृद्धि करे,
क्षीं उच्चारण लक्ष्मी रक्षक, क्षूं से प्राण सुरक्ष करे।
क्षें पापों से रक्षा करता, क्षैं अरिगण से बचा रहा,

क्षों रोगों से बचाव करता, क्षौं चोरों को भगा रहा ॥12॥
क्षं बीजाक्षर त्रिभुवन रक्षक, हे जिनवर रक्षा कीजे,
क्षः बीजाक्षर से त्रिलोक के, जीवों पर करुणा कीजे।
ह्रां जय बीजाक्षर प्रभाव से, शत्रु मित्र सम हो जायें,
ह्रीं कल्याणक शरण प्रदाता, प्रभु समर्थ हो सुख पायें ॥13॥
दण्ड बीज ह्रूं हे अनुशासक, मम मन अनुशासित कर दो,
ह्रें बीजाक्षर से प्रभु मुझको, हित पथ में समर्थ कर दो।
ह्रैं बीजाक्षर राज बीज से, राज्यपना की सुप्राप्ति हो,
ह्रों बीजाक्षर महाशक्ति से, निर्बलपन की समाप्ति हो ॥14॥
ह्रौं संजीवन महाबीज से, शक्ति जीवनी दान करो,
ह्रः बीजाक्षर ज्ञान बीज से, जीवन से अज्ञान हरो।
ठः बीजाक्षर से हे भगवन्!, मेरा अहित रोक दीजे,
सम्मुख होओ दर्शन देओ, हे जिन! मेरा हित कीजे ॥15॥
हे जिन! ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः, अ सि आ उ सा नमः स्वाहा,
मंत्र जाप से सब बाधायें, रोग शोक सब हो स्वाहा।
पन परमेष्ठी आप कृपा से, सभी विघ्न बाधा नाशें,
सम्यक् साधन सबके हित में, सहज दृष्टि में प्रतिभासें ॥16॥

ओं ह्रीं अर्हं शान्तिधारादिवसेश्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रेरक निर्यापक श्रमण, सुधासिन्धु मुनिराज,
बृहत्शान्तिधारा कही, करो सधें सब काज ॥
विद्यासागर सूरि से, ज्ञान बिन्दु उर धार।
आर्या मृदुमति ने रचा, शान्तिनाथ गुणहार ॥

॥ इति शुभम् भूयात् ॥

Since 1973

Computer Re-Setting by :

Jeetendra Patni

M. 98290 71922

01.06.2021